DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR; BIHAR.
By- Dr. Ankit Yadav (Asst. Prof. GPT)

B.A Part-II (H) Paper- IV

Date - 27-07-20

(Comparative Government and Politics)

Lecture-No- 24

संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम
(Structural Functional Analysis)

तुलनात्मक राजनीति में व्यवस्था विश्लेषण का संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम डेविड ईस्टन के निवेश-निर्गत विश्लेषण से उत्पन्न असंतोष के कारण अस्तित्व में आया। ईस्टन का निवेश-निर्गत (Inputs-outputs) मॉडल सामान्य सिद्धांत निर्माण में तुलनात्मक राजनीति को बहुत आगे तक नहीं ले जा पाया। अतः आमण्ड ने राजनीतिक को संरचनाओं और प्रकार्य के रूप में समझने के प्रयत्न का विचार प्रस्तुत किया।

संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम इस बात की व्याख्या करता है कि कौन सी संरचना राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत कौन से कार्यों का संपादन करती है। यह वस्तुतः व्याख्या और परीक्षण का एक उपकरण है। यह आगम दो प्रमुख धारणाओं पर केन्द्रित है। और ये धारणाएं हैं - प्रकार्य और संरचना की धारणाएं। इस उपागम के अन्तर्गत हम तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन सरकारों की संरचना एवं कार्यों का विश्लेषण करके कर सकते हैं। संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम की मूल मान्यता यह है कि मनुष्य सुसंगत ढंग से क्रिया करता है अर्थात वह अपनी भूतकालीन आपसी क्रियाओं को दुहराता है। जब इन अन्तर्क्रियाओं को एक सीमा के बाहर दुहराया जाता है तब इसके परिणामस्वरूप संरचनाओं (structures) की उत्पत्ति होती है। उदाहरण के लिए ब्रिटिश संसद की एक संरचना है। कुछ संरचनाएं ऐसी होती हैं जो तब तक अनाम रहती हैं जब तक उन्हें कोई नाम नहीं देता। जब किसी संरचना में निरंतर सम्पादित होने वाले व्यवहारों के कारण उस संरचना के अस्तित्व को स्थिर रहने का सहारा मिलता है, तो समाज वैज्ञानिक उन क्रियाओं को प्रकार्यात्मक (Functional) कहते हैं। इसके विपरीत संरचना के अन्तर्गत निरन्तर सम्पन्न होने-

B.A-Part-II (H) Paper-IV

Lecture No-24

बल्कि जिन व्यवहारों से उस संरचना के अस्तित्व पर आघात पहुँचता है, उन व्यवहारों को समाज वैज्ञानिक दुष्क्रियात्मकता (Dys-functional) की संज्ञा देते हैं।

विचारक एलेन बाल के अनुसार—" सामान्य व्यवस्था सिद्धांत के फलस्वरूप संरचनात्मक प्रकार्यात्मक अध्ययन उपागम अस्तित्व में आया।" तुलनात्मक राजनीति में इस उपागम का विशेष रूप से प्रयोग आमण्ड एवं पावेल ने किया है और उन्होंने डेविड ईस्टन की तरह ही राजनीतिक व्यवस्था के चार लक्षण माने हैं—

I- राजनीतिक व्यवस्था के भागों में अन्तर्निर्भरता

II- राजनीतिक व्यवस्था की सीमा

III- राजनीतिक व्यवस्था का पर्यावरण

IV- राजनीतिक व्यवस्था द्वारा बाध्यकारी शक्ति का प्रयोग

किन्तु डेविड ईस्टन ने राजनीतिक व्यवस्था को निवेश-निर्गत (Inputs—Outputs) के रूप में समझने का प्रयास किया जबकि आमण्ड इसे संरचनाओं और प्रकार्यों के आधार पर समझते हैं। इस कारण संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम की विशेषताएँ राजनीतिक व्यवस्था उपागम से कुछ भिन्न प्रकार की हो जाती हैं—

1- सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था पर बल

2. विशिष्ट कार्यों की शर्त का प्रतिपादन

3. विविध संरचनाओं में प्रकार्यात्मक अन्तर्निर्भरता

4. संरचनात्मक प्रतिस्थापना की मान्यता

5. प्रकार्यात्मक संरचनाओं की मान्यता

Date-27-07-20

By-DR. A.K. Yadav
(Asstt Prof. G.P.+.+)
Pol. SC.

Continuance +—
Next Lecture

Scanned with CamScanner